Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

चन्द्रकला नाटिका का वैशिष्ट्य

रति सिंह
वरिष्ठ शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।,

डा० देवनारायण पाठक
संस्कृत विभागाध्क्ष, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश

Article Info
Volume 4, Issue 4
Page Number : 71-73
Publication Issue :
July-August-2021
Article History
Accepted : 03 July 2021
Published : 10 July 2021

सारांश— आचार्य विश्वनाथ ने अपनी नवनवोन्मेषी प्रतिभा के द्वारा चन्द्रकला नाटिका की विशेषता पर विवेचना प्रस्तुत की है। अन्य आचार्यो के भाँति इनकी नाटिका भी अनेक दृष्टिकोणों से पृथक एवं विशिष्ट प्रतीत होता है। प्राचीन नाट्यकारों ने जहाँ नाटकों के माध्यम से आनन्द की प्राप्ति सहृदय समाजिकों को प्रदान की है वही आचार्य के द्वारा नाटिका की रचना करके समस्त आनन्द की अनुभूति से युक्त अपने वैशिष्ट्य को व्यक्त करती है।

मुख्य शब्द– आचार्य विश्वनाथ, चन्द्रकला, नाटिका, वैशिष्ट्य नाट्यकार, शास्त्रीय।

चन्द्रकला नाटिका की कथावस्तु रत्नावलीं, स्वप्नवासवदत्त आदि पूर्ववर्ती रचनाओं तथा उनमें आने वाली घटनाओं से पर्याप्त सादृश्य लिये है और नाटिका के शास्त्रीय लक्षण और नाट्यरूढ़ियों का मनोयोगपूर्वक प्रस्तुतीकरण करती है। यदि शास्त्रीय लक्षणों को ध्यान से देखें तो प्रस्तुत नाटिका में– लक्षणानुसार चार अंक है तथा महारानी आदि स्त्रीपात्रों की प्रमुखता और बाहुल्य है जो नाटकीय संविधान के विकास में निदर्शित किया है और यथासम्भव इनके सम्मिश्रण को आवश्यक भी माना है। चन्द्रकला की नायिका यथार्थ मालविकाग्निमित्र की मालविका की तरह नृत्यविशारदा, स्वप्नवासवदत्त की वासवदत्ता जैसी वीणावादन कुशलता या रत्नावली की तरह।
चित्रकर्मविशारदा नहीं है, किन्तु वह एक रूप लावण्यसम्पन्ना सुलक्षणा कन्या के रूप में बड़ी सफल एवं प्रभावशालिनी बन पड़ी है। नाटिका में श्रृंगार के विप्रलम्भपक्ष का जो कलात्मक प्रस्तुतीकरण है वह करूणगीतिनिनाद सा आवर्जन एवं मनोहारी प्रभाव डालने में पर्याप्त सक्षम है।

विश्वनाथ का व्यक्तित्व गम्भीर शास्त्रनुशीलन के कारण आलङ्कारिक आचार्यत्व की ओर अधिक झुकाव लिये हुए था। इसी कारण प्रस्तुत नाटिका में शास्त्रीय लक्षणों एवं रूढ़ियों का जहाँ पूर्णत: अनुसरण करने का उद्योग हुआ वहीं मौलिकता के लिए कठिनाई उपस्थित हुई और ऐसा लगने लगा कि इसमें घटित घटनाएँ कहीं स्वप्नवासवदत्ता के कहीं, रत्नावली या प्रियदर्शिका के या फिर कालिदास के मालविकाग्निमित्र आदि के आसपास मंडरा रही हों। सर्वत्र एक उदाहरण के रूप में निर्मित नाटिका का रूप ही उभरता दिखलाई पड़ता है और इस प्रकार विश्वनाथ कविराज मूल्यांकन के बाद द्वितीय श्रेणी के नाटककार ही ठहरते हैं। यदि इनकी अन्य नाटिका प्रभावती –परिणय प्राप्त होती तो तुलनात्मक दृष्टि से नाटकीयता गुणों का उचित विवेचना किया जा सकता था। प्रस्तुत कृति को देखने से ऐसा लगता है कि वे अपने पात्रों के कार्यों और घटना–कौशल में रत्नावली जैसी दीप्ति उत्पन्न करने का प्रयास कर रहें हैं इसी कारण कालिदास के सादृश्यनाट्य एवं प्रखर आकर्षण शाक्ति का प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत कृति में दूर की बात हो गयी। कहीं–कहीं

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मालविकाग्निमित्र की अनुकृति करते हुए विरहिजन को कष्ट देने वाली दशा का प्रसंग उठाया गया है और इस क्रम में वसन्त के सारे आलम्ब एवं उद्दीपन दिखाये गय हैं। इसी प्रकार चन्द्रिका का भी एक प्रसंग पर उल्लेख किया गया है परन्तु ऐसे समय पात्रों के कार्य का व्यवहार अधिक प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पायें यहाँ तक कि राजा का विरह प्रलाप स्पष्टत: 'विक्रमोवर्शीय' के पुरूरवा-प्रलाप की एक अनुकृति मात्र बन कर रह गयी।

इसी प्रकार 'रत्नावली' वानर की तरह जो यहाँ तरक्षु प्रसंग की तरह उद्भावना की गयी है उसे सर्वथा तर्कसंगत नहीं माना जा सकता है क्योंकि महारानी चतुर होकर भी नकली तरक्षु का विनिश्चय नहीं कर पाती है। आगे भी उनके इसी प्रकार का स्वभाव का थोड़ा अंकन किया गया है जब वह अपनी ही छोटी बहिन को ठीक से नहीं पहचानती जब कि पितृगृह से आने वाले बन्दीगण चनद्रकला को तुरन्त जान लेते हैं। इससे पाठकों को यह भी अनुमान लगाना पड़ता है कि कदाचित् महामन्त्री सुबुद्धि ने चन्द्रकला को अपना ठीक परिचय न देकर अन्त:पुर में रहने की सलाह दी होगी परन्तु कथाक्रम में ही स्पष्ट घटना के रूप में या कथनोपकथन में रख दी जाती तो अधिक अच्छा होता। नाटिका की कथावस्तु कल्पित होती है और ऐसे स्वरूप को प्रस्तुत करने का ही विश्वनाथ कविराज का उद्योग रहा है। अतएव इसे किसी पौराणिक कथा या सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक कथा के आधार पर ग्रथित 'नाटिका' नहीं माना जा सकता। यदि हम प्रस्तुत नाटिका के नायक चित्ररथदेव को भानुदेव का प्रतीक माने तो यह इतिहास से स्पष्ट नहीं हो पाएगा कि महाराज भानुदेव चतुर्थ की महारानी राजुला देवी पाण्डयनरेश की थी या किसी अन्य प्रदेश की ओर इस प्रकार यह विचार एक दूरारूढ़ कल्पना मात्र होगी उसके ऐतिहासिक उत्स स्थापित करने में और इस प्रकार हम इसे उत्पाद्य कथावस्तु -समन्वित नाटिका के स्थान पर इसके अन्य रूप को स्पष्ट करने में भी समर्थ न हो पाएंगे। क्योंकि तब सेनापति के विक्रमाभरण या महामन्त्री सुबुद्धि के अभिधानों को भी प्रतीक मानकर उनका स्पष्टीकरण देना होगा। अतएव 'नाटिका' की कल्पित कथावस्तु को ही नियमानुसार यहाँ रखा गया है यही मानना युक्तिसंगत होगा।

चन्द्रकला नाटिका की समीक्षा के प्रसंग में उसके अनुपम एवं मनोहारी नाट्य सौष्ठव को भुलाया नहीं जा सकता जिसमें अनेक सुन्दर वृत्तचित्रों को काव्यत्मकता के रमणीय परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। ऐसे चित्र हमें रात्रि के अंधकार और प्रकाश, चीते का उपद्रव आदि मिलते है जिसमें नायिका का सौन्दर्यवर्णन अपनी रमणीयता पदावली और अनवद्यशैली के कारण हृदय को छू सा लेता है और महाराज चित्ररथदेव की संयोग और वियोग की अवस्थाएँ मार्मिक बन पड़ी है। इन प्रसंगो में वसन्तऋतु और चन्द्रोदय के प्राकृतिक-माध्यमों ने जिन रमणीय संगीत ध्वनीयों को छोड़ा वे निस्सन्देह मनोमुग्धकारिणी हैं। चन्द्रकला में काव्य-सौन्दर्य के प्रचुर प्रदेश सहज प्राप्त है एवं इन्हीं विशेषताओं के कारण नाट्यकार के रुप में भी विश्वनाथ कविराज का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने कलात्मक सौष्ठव को पर्याप्तमात्रा में प्रकट करने में सक्षम होने के कारण नाटिकाओ के विकास क्रम में 'चन्द्रकला' ने मध्यकाल की रचनाओ में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की उपयुक्ता को स्वत: प्रतिनिधि रचना बन कर प्रमाणित कर दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. चन्द्रकला नाटिका - श्री बाबू लाल शुक्ल शास्त्री
2. चन्द्रकला नाटिका - डॉ0 जयशंकर त्रिपाठी
3. दशरुपक - डा0 धनञ्जय
4. काव्यप्रकाश - आ0 विश्वेश्वर
4. साहित्यदर्पण - विश्वनाथ कविराज लक्ष्मी टीका
5. ध्वन्यालोक - आ0 विश्वेश्वर
6. ध्वन्यालोकलोचन - अभिनवगुप्त
7. नाट्यदर्पण - रामचन्द्र, गुणचन्द्र (हिन्दी व्याख्या)

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास
9. अभिनयदर्पण – नन्दिकेश्वर, के.एन. मुखोपाध्याय
10.अभिनव भारती – अभिनवगुप्त
11.काव्यादर्श – दण्डी
12.काव्यानुशासन – हेमचन्द्र
13.काव्यालङ्कार – रुद्रट
14. काव्यालङ्कार – भामह
15. काव्यालङ्कारसंग्रह – उद्भट्ट